श्री रतनलाल कंवरलाल पाटनी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय

किशनगढ़

नागरी

ई-पत्रिका

सत्र 2021–2022

प्राचार्य एवं संरक्षक

डॉ. शिवरतन डागा

सम्पादक-मण्डल

डॉ. सत्यदेव सिंह

डॉ. सरोज मालपानी डॉ. मोहिता प्रसाद

डॉ. उमा बारैठ प्रो. अलका जैन

डॉ. सुनीता चावला

डिस्क्लेमर:- नागरी ई-पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित विषय-सामग्री की मौलिकता, इसमें अभिव्यक्त विचार, मत एवं दृष्टिकोण के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी है.

प्राचार्य सन्देश

भारतीय मनीषियों ने युवा अवस्था को शिक्षा ग्रहण करने की अवस्था माना है. यह जीवन के वसंत की अवस्था है भरपूर ऊर्जस्वित और स्वप्नपूरित. प्रत्येक युवा अपनी अक्षय ऊर्जा शक्ति से नव सर्जन और नवाचार की क्षमता रखता है. नागरी पत्रिका विद्यार्थियों की इस सर्जनात्मक ऊर्जा को आयाम देने की दिशा में एक कदम है. नागरीदास की नगरी किशनगढ़ सांस्कृतिक वैभव की प्रतीक रही है. भक्ति एवं नीति और माधुर्य का त्रिवेणी संगम यहाँ उपस्थित रहा है. इस पत्रिका का नाम 'नागरी' भी इसी पृष्ठभूमि की ओर संकेत है. बहरहाल नयी तकनीक के साथ कदम-ताल मिलाते हुए और हृदय में पर्यावरण संरक्षण का भाव संजोते हुए 'नागरी' को ई-पत्रिका के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है. महाविद्यालय का यह लघु नवाचार आशा है आपको सुखद अनुभूति देगा. इस पत्रिका के लिए अपनी रचना देने के लिए रचनाकारों का साधुवाद करता हूँ. मुझे विश्वास है कि 'नागरी' का यह नया इलेक्ट्रॉनिक अंक नए रचनाकारों को भी प्रेरणा देगा.

डॉ. शिवरतन डागा

प्राचार्य

अनुक्रमणिका

1. माँ मुझे पढ़ने दो – डॉ. अलका पारीक 5
2. माँ की ममता – कुलदीप मालाकार 6
3. नारी सम्मान – अरबाज काठात 7
4. बीज का उगना – मीनाक्षी कुमारी शर्मा 8
5. नए ख्वाब – मोनिका वैष्णव 9
6. परिवार एक वृक्ष – अनिल साँठीवाल 10
7. अम्मा बड़ी कमाल – सूर्यप्रकाश साँठीवाल 12
8. बचपन के दिन – विशाल गुसांईवाल 13
9. माँ सिर्फ शब्द नहीं – टीकम जग्रवाल 14
10. वचन मैं तो वीरांगना हूँ – मीनाक्षी कुमारी शर्मा 15
11. दर्द – टीकम जग्रवाल 16
12. स्वच्छता अभियान -- सूर्यप्रकाश साँठीवाल 17
13. इनसानियत -- प्रो. अलका जैन 18
14. कभी–कभी –– शिवानी शर्मा 19
15. याराना -- प्रवीण माली 20
16. एक आस है -- रवीन्द्र मालाकार 21
17. किशनगढ़ रियासत और वैष्णव भक्ति – डॉ. चन्द्रप्रभा पारीक 22
18. पर्यावरण प्रदूषण को बचाने में महिलाओं की भूमिका– डॉ.सुधा मित्तल 24
19. धर्म – डॉ. उमा बारैठ 25
20. सुभाषित–प्रदीप – भावना यादव 26
21. BAREFOOT COLLEGE – HISTORY – DR.RAJANI SHARMA 27

माँ मुझे पढ़ने दो

डॉ. अलका पारीक
एसोसिएट प्रोफेसर
प्राणिथास्त्र विभाग

माँ मुझे पढ़ने दो
मुझे भी आगे बढ़ने दो
माँ मैं समझती हूं पौष्टिक भोजन
मुझे भी पौष्टिक भोजन करने दो
स्वस्थ और ताकतवर बनने दो
माँ तुम समझती हो मेरी कमजोरियां
लेकिन मुझे मेरी ताकत भी समझने दो
माँ मै परी हूं तुम्हारी और बाबा की
पर मुझे भी झांसी की रानी बनने दो
माँ हो सकता है मैं अच्छा नहीं खेल पाऊँ
पर मुझे भी मैदान में खेलने दो
बाबा तुम बस मेरा हौंसला बढ़ाते जाओ
मैं तुम्हारी ताकत बन जाऊंगी
तुम्हारे विश्वास की डोर को
बहुत ऊंचा ले जाऊंगी
किताबों के संग संग
थोड़ा वक्त दे दो मुझे
पढ़ते पढ़ते थक जाऊं तो
थोड़ा दुलार दे दो मुझे
तुम देखना कहां तक जाऊंगी मैं
कभी पनडुब्बी
तो कभी हवाई जहाज उड़ाऊंगी मैं
तुम देखना तो सही
क्या नहीं कर पाऊंगी मैं
क्या नहीं कर पाऊंगी मैं....

माँ की ममता

कुलदीप मालाकार
कला स्नातक

जगत के सारे रिश्तों का आधार है "माँ"
खुशियाँ हैं जिसके दम से वो है "माँ"
चाहतों का खुला आसमाँ है "माँ"
जिन्दगी की रेखा की शुरूआत है "माँ"
कभी ना मिटने वाला अनमोल जज्बात है "माँ"
एक बच्चे के लिए उसका संसार है "माँ"
जो कभी खत्म ना हो वो प्यार है "माँ"
शब्दों के तराजू में तोलो तो एक छोटा शब्द है माँ
लेकिन दुनिया की सारी ताकतों को अपने में समेटे
प्यार और दुलार की डोर को अपने में समेटे
इस संसार का सार है माँ

नारी सम्मान

अरबाज काठात

कला स्नातक

नारी शक्ति से गूँज रही यह धरती रहती है संतुलित
फिर भी हम जान ना पाए नारी की अतुलित शक्ति
गूँज रही इतिहास में नारी शक्ति की अनन्त कहानियाँ
अन्तर्मन को प्रोत्साहित करतीं हैं सन्तों की वाणियाँ
वेद–उपनिषद् ग्रन्थ सारे नारी के गुण गाते हैं
फिर क्यों भ्रूण हत्या करके नर आरोपी कहलाते हैं
क्यों नारी का कर तिरस्कार संस्कार विहीन कहाते हैं।
घर–घर में बुजुर्ग हमें नारी सम्मान सिखाते हैं
हम मन्दिर में देवी की पूजा करके इठलाते हैं
फिर क्यों बेटी के जन्म–मात्र से माता–पिता कतराते हैं
दहेज की ज्वाला में जलती है क्यों कर अब भी नारी
क्यों अपमानित होती है, क्यों कहलाती है बेचारी
बेटे को कुलदीपक कह बेटी का नाम लजाते हैं,
ऐसा करके नारी सम्मान को ठेस पहुँचाते हैं।

बीज का उगना

मीनाक्षी कुमारी शर्मा

विज्ञान स्नातक

जमीन पर जब बीज गिरता है तो

पानी उसे बहुत गलाता है

फिर भी वह अंकुरित हो जाता है

वह कभी हारता नहीं या तो जीतता है या फिर सीखता है!

हवा उसे खूब सुखाती है फिर भी

वह हिम्मत नहीं हारता

वह या तो जीतता है या सीखता है!

धूप उसे बहुत ज्यादा जलाती है

फिर भी वह डरता नहीं अंकुरित हो जाता है

वह कभी हारता नहींएवह या तो सीखता है या फिर जीतता है

मिट्टी उसे बहुत दबाती है फिर भी उभरकर ऊपर निकल आता है

वह कभी हारता नहीं या तो जीतता है या सीखता है!

इस तरह बीज से पहले पौधा और फिर पेड़ बन जाता है

संघर्षों में भी निरंतर आगे बढ़ने का पाठ हमें पढ़ाता है!

वह कभी हारता नहीं या तो जीतता है या सीखता है!

नए ख्वाब

मोनिका वैष्णव

विज्ञान स्नातक

रात के महीन सन्नाटे में

कल्पनाओं के स्वर्णिम उड़न खटोले पर सवार

उतरती है कविता किसी परीलोक की नायिका की तरह

मेरे मन के उमगते आंगन में

और देखती रहती है मुझे

एक टक कुछ पल कुछ देर तलक

किसी स्निग्ध भाव की तरह

और फिर बहती है मेरी दुनिया में

किसी हिमालय से उतरती

चंचल शोख हसीना-सी

किसी सरिता की तरह

मेरे जीवन को बनाती स्वर्ग

या फिर बज उठती है कहीं

किसी वीणा के तारों में सोई झंकार-सी

अचानक ही मेरी तंद्रा को झकझोरती

किसी स्वर्णिम संगीत लहरी की तरह

और फिर बुनने लगती है कलम

कागज पर नए ख्वाब...

परिवार एक वृक्ष

अनिल साँठीवाल

कला स्नातक

सोचा था बहुत कुछ करूँगा पर रह गया मन मसोसकर

सोचा था इतना प्यारा होगा आंगन अपना

किसी चक्रवर्ती सम्राट ने भी नहीं सोचा होगा ऐसा सपना

खुशियों की देवियाँ हर रोज दरवाजे पर देंगी दस्तक

गमों की बदनसीबियाँ हर पल होंगी जीवन से रुखसत

आंगन के बीचों बीच रिश्तों का बीज उगाया

ममता से उसे सींचा प्रेम का पाठ पढ़ाया

माँ के आंचल की छाँव ने उसमें नया जीवन भर दिया

उस प्यारे-से फूल ने भी अपना सर माँ की गोद में धर दिया

पिता की धूप ने पौधे को वृक्ष बनाया

खुद मूल बनकर उसे शिखर तक पहुँचाया

पर अब हर डाल हर पात अपना नया जीवन ढूँढे है

वृक्ष से अलग-थलग विलग होकर नया आशियाना ढूँढे है

अब वृक्ष सूख कर हो गया है ठूँठ

किस्मत की रानी उनसे गई है रूठ आओ देखो खिल-खिलाओ ठहाके लगाकर हँसो

यह वही वृक्ष है शिखर तक जाने वाला

यह वही वृक्ष है हवा से बातें किया करता था

यह मत पूछोए मत सुनो कि अब वह क्यों आहें भरा करता था

देखो अब भगवान भी इस वृक्ष से रूठ गए

बागवान के प्यारे सपने अपने सपने टूट गए

यही कहानी मेरी यही कहानी तेरी देखा है मैंने घर घर जाकर

सोचा था बहुत कुछ करूँगा पर रह गया मन मसोसकर

पर यारो जब खाली बैठे हो तो आना इस ओर कभी

उन बागवानों की आँखों में जिंदा है सपने अभी-भी

हर रोज वो अपने वृक्ष को आज भी सींचे है

फूटेगी नई कली यह आज अभी-भी बचे है

अरे हँसो मतए यह दुनियावालों देखा है तुमने कल होगा क्या

और देख इसे मत आज तू देखना उसे कल होगा क्या?

अम्मा बड़ी कमाल है

सूर्यप्रकाश साँठीवाल

कला स्नातक

अम्मा बड़ी कमाल है
सबकी छोटी-छोटी सारी बातों का ख्याल है
मुझको जादूगर-सी लगती अम्मा बड़ी कमाल है!

उसकी आँखों का सूरज मुझको गीला-सा लगता है
उसके माथे के चंदा का रंग भी सुर्ख़ लाल है!

मैंने अक्सर देखा है वह छुप के रोया करती है
उसका पल्लू जैसे कोई सतरंगी रूमाल है!

चिमटा-बेलन लेकर वह हम सबको डाँटा करती है
बच्चे कुछ खाते ही नहीं हैं उसको बड़ा मलाल है!

हँस-हँसकर जो पूरी करती सबकी हर फरमाइश को
उसके भी कुछ सपने होंगे उसका किसे ख्याल है !

बचपन के दिन

विशाल गुसांईवाल

विज्ञान स्नातक

एक बचपन का जमाना था
जिस में खुशियों का खजाना था
चाहत चाँद को पाने की थी
पर दिल तितली का दिवाना था

खबर ना थी कुछ सुबह की
न शाम का ठिकाना था
थक कर आना स्कूल से
पर खेलने भी जाना था

माँ की कहानी थी
परियों का फसाना था
बारिश में कागज की नाव थी
हर मौसम सुहाना था
रोने की वजह ना थी
ना हँसने का बहाना था
क्यों हो गए हम इतने बड़े
इससे तो अच्छा वह
बचपन का जमाना था

माँ सिर्फ शब्द नहीं

टीकम जग्रवाल

विज्ञान स्नातक

माँ सिर्फ शब्द नहीं

पूरी दुनिया पूरा संसार है माँ

अंतरिक्ष के उस पार से

उस पार तक का अंतहीन विस्तार है माँ

मां सिर्फ शब्द नहीं...

शिशु की हर तकलीफ को रोके

ऐसी इक दीवार है माँ

शब्दकोश में नहीं मिलेगा

वह कोमल एहसास है माँ

माँ सिर्फ शब्द नहीं...

सृजनकर्ता है वह सब की

प्रकृति का अनुपम उपहार है

ममता की मूरत दया की अवतार है

ब्रह्म भी और नाद भी है माँ

माँ सिर्फ शब्द नहीं...

स्वर लहरी की मीठी झंकार है माँ लहरों का शीतल सरस प्रवाह है

माँ बंसी की धुन में बसती

पाप विनाशक रणचंडी का अवतार है

मां सिर्फ शब्द नहीं ...

माँ में पूरी दुनिया पूरा का पूरा संसार है...

मैं तो वीरांगना हूँ

मीनाक्षी कुमारी शर्मा

विज्ञान स्नातक

जिंदगी तुमने युद्ध बना कर दी तो क्या
हार मान हथियार डाल दूँगी
मैं तो वीरांगना हूँ डटकर लड़कर जीतकर संग कर लूंगी!

जिंदगी तुमने जहर बना कर दी तो क्या
मैं उसे प्राणों को हर ने दूंगी
मैं तो मीरा हूँ भक्ति की शक्ति से
घूँट भर पीकर उसे बेअसर कर दूँगी!

जिंदगी तुमने रेत बना कर दी तो क्या इसे मुट्ठी से फिसलने दूंगी
अपने आँसुओं से गूँथकर
गागर बनाकर से खुशियों से भर लूँगी!

जिंदगी तुमने लंगड़ी बना कर दी तो क्या
इसे कुर्सी पर घिसटने दूँगी
मैं तो हिम्मत हूँ अपने दृढ़ निश्चय से
पुनः बिना सहारे खड़ी हो चलूँगी!

दर्द

टीकम जग्रवाल

विज्ञान स्नातक

निर्धन के साथी रे तेरा दर्द न जाने कोई

अभिमान के साथी रे पीछे मुड़ के ना देख रे

निर्धन के साथी रे तेरा साथ न दे जब कोई

तब तू गिर-गिर के संभले जाए रे

लोग हाँ में हाँ मिलाए रे तेरा दर्द न जाने कोई।

निर्धन के साथी रे बाहर से तू हँस-हँस

औरों को खुशियाँ बाँटे रे तू भीतर-भीतर रोए

मन का काम ना करने पाए जब ऐसी हालत होए

तब मन की सुन बावरे जो होनी हो सो होए

तेरा दर्द न जाने कोई...

स्वच्छता अभियान

सूर्यप्रकाश साँठीवाल

कला स्नातक

साफ सफाई का सपना था बापू जी के ध्यान में

आओ मिलकर सब हाथ बढ़ाएँ स्वच्छ भारत अभियान में!

घर-आंगन की करें सफाई साफ दिखे हर कोना

इधर-उधर मत फेंको कूड़ा दिल में यही सँजोना

करो इकट्ठा एक साथ सब डालो कूड़ेदान में

आओ मिलकर सब हाथ बढ़ाएँ स्वच्छ भारत अभियान में!

गलियों और पार्कों में भी साफ-सफाई रखना है

निज आंगन की तरह सदा ही इनको हमें समझना है

खुद भी टहलें बच्चे खेलें इसी बीच दरमियान में

आओ मिलकर सब हाथ बढ़ाएँ स्वच्छ भारत अभियान में

हर घर में शौचालय होवे खुले में शौच न जाना है

बहन-बेटियों को भी हरदम बात यही समझाना है

आदत यही विकसित करनी होगी बूढ़े और जवान में

आओ मिलकर सब बात बताएँ स्वच्छ भारत अभियान में

अस्पताल हो या कार्यालय विद्यालय या सचिवालय

साफ-सफाई हरदम रखें समझे इन्हें शिवालय

देख इसे मेहमान भी समझें आए देश महान में

आओ मिलकर सब साथ बताएँ स्वच्छ भारत अभियान में...

इनसानियत

प्रो. अलका जैन
एसोसिएट प्राफेसर
हिन्दी

लड़ते रहो तुत काशी और काबा के नाम पर
इनसानियत तो रोज दफन होती ही रहेगी

पीर और पैगम्बर को सजदे ही करो तुम
माँएँ सूनी कोख को रोती ही रहेंगी

मनों दूध बहा दें इबादत के नाम पर
गंगाएँ अपना तंज खोती रहेंगी

जगते रहो तुम रातों को तुम नारे लगाते
आत्मा की आवाज पर सोती ही रहेगी

इनसान के माथे पर लगाकर बदनुमा दाग
इनसानियत गहरी नींद में सोती ही रहेगी

कभी–कभी

शिवानी शर्मा
कला स्नातक

कभी – कभी दिल टूट जाता है।
जब कोई अपना हमसे रूठ जाता है।।
कभी–कभी एक छोटी–सी बात भी दिल को रुलाती है।
जब किसी अपने से दूर जाने की घडी आ जाती है।।
कभी–कभी कुछ बातें गलतफहमियाँ बन जाती हैं।
जो अपनों को अपनों से दूर कर जाती हैं।।
कभी–कभी मजाक में भी गुस्सा आ जाता है।
जब अपनों से दूर जाने का डर दिल को तड़पाता है।।
कभी–कभी खामोशियों में छुपी होती है बातें अनकही,
जब सुनने के लिए कोई हमदर्द नहीं रहता कहीं।
कभी–कभी सन्नाटा भी कह जाता है बातें कई,
जो शोर की महफिलों में सुनाई नहीं देती कहीं।
कभी–कभी हम दोस्ती निभाते–निभाते भूल जाते हैं,
वो अपने ही नहीं जिन्हें पाने के लिए हम अपनों को छोड़ आते हैं।
कभी–कभी लगता है बहुत आसान है ‘‘रिश्ता तोड़ना’’
पर तभी याद आता है कितना मुश्किल है निभाना
कभी–कभी याद बनकर रह जाती हैं दिल में छुपी
बस रिश्ते और अपने बदल जाते हैं समय की तरह
कभी–कभी लगता है भाग जाऊँ इन सबसे दूर
लेकिन ठहर जाती हूँ ये सोचकर मैं फिर
कैसे जी पाऊँगी मैं इन सब के बिना ?

यारााना

प्रवीण माली
कला स्नातक

यारााना यारों का यारााना
हँसता रहे अपना जो है यारााना
जाना ना, हम निकलें अब जाना ना
कैसे जुड़ा यारों का है ये जो यारााना
हम ऐसे मिले कि, जैसे बूँदें मिलती हों,
कुछ ऐसे बढ़े कि, जैसे शाखें बढ़ती हों,
अब ऐसे उठे कि, जैसे लहरें उठती हों,
कुछ ऐसे चले कि, जैसे नदियाँ बहती हों
खुशियाँ गम ऐसे कि, सब कुछ एक लगने लगे
चाहे हो जिस्म अलग, पर साँसें एक लगे,
अब जो होगा यारी, यूँ ही रहे
ये मंजिल एक रहे, ये साहिल एक रहे,
अब बस ये है दुआ, खुशियाँ मिलती रहें
रहें भले ही हम जुदा राहें मिलती रहें सदा
यारााना यारों का है ये जो है ये यारााना
हँसता रहे अपना जो है ये यारााना
जाना ना हम निकलें अब जाना ना

एक आस है

रवीन्द्र मालाकार
कला स्नातक

एक आस है माँ
तपते रेगिस्तान में छाँह का अहसास है माँ
शस्य, श्यामलासी विशालहृदया, वसुन्धरा है माँ
माँ का आँचल सुख का सागर है
जो दामन थाम ले
पार कर जाता भवसागर है
माँ प्यार है
जीवन का आधार है
माँ उल्लास है
खुशी है प्रेम है
जीवन की उमंग है
ममता और वात्सल्य की प्रतिमूर्ति है माँ
माँ प्यार है
जीवन का आधार है
पावन, निर्मल, कोमल है माँ
त्याग तपस्या की मूर्ति है माँ
माँ प्यार है
जीवन का आधार है।

किशनगढ़ रियासत और वैष्णव भक्ति

डॉ. चन्द्रप्रभा पारीक
एसोसिएट प्रोफेसर
इतिहास

किशनगढ़ रियासत राजपूताना में भक्ति कला एवं संस्कृति का केंद्र रही है जिसने भारत में ही नहीं वरन् विश्व अपनी अमिट पहचान बनाई है। वैष्णव भक्ति के प्रभाव स्वरूप ही किशनगढ़ रियासत को कृष्णगढ़ के रूप में गौरव और प्रसिद्धि प्राप्त हुई। इतिहास साक्षी है कि वैष्णव भक्ति भावना राजस्थान के शासकों को विरासत में मिली थी। उनके द्वारा प्रवाहित काव्य, संगीत और चित्रकला की त्रिवेणी ने संपूर्ण रियासत को वैष्णव भक्ति रस में निमग्न कर दिया।

भारतीय संस्कृति को प्राणवान बनाने वाले वैष्णव धर्म को भक्ति रस से परिपूर्ण साहित्यिक सृजन कर किशनगढ़ रियासत के शासकों ने अपना अभूतपूर्व योगदान दिया। महाराजा रूप सिंह कृष्ण के अनन्य भक्त एवं उच्च कोटि के विद्वान थे उन्होंने भक्ति भाव से भरे रूप सतसई ग्रन्थ की रचना की जो रीतिकाल का श्रेष्ठ ग्रंथ माना जाता है। भक्ति की अविरल धारा को आगे बढ़ाते हुए महाराजा मानसिंह द्वारा संत संप्रदाय कल्पद्रुम पुष्टिमार्ग का प्रमाणिक ग्रंथ रचा गया। महाराजा राज सिंह द्वारा रचित ग्रंथों में उनकी वैष्णव-कृष्ण भक्ति दृढ़ रूप से प्रकट होती है । उनके सभी ग्रंथ वैष्णव मंदिरों में मनाए जाने वाले विभिन्न उत्सवों से संबंधित हैं -जन्मोत्सव के विष्णुपद, शरद पूर्णिमा के विष्णुपद, रास के विष्णुपद, होली के विष्णुपद, रथयात्रा के विष्णुपद, कीर्तन कवित्त, राधाष्टमी के पद, रामनवमी के पद, रामलीला के पद, रुक्मणी हरण, हिंडोला के पद, नरसिंह चतुर्दशी के पद इत्यादि ब्रजभाषा की मधुरता से भक्ति रस में डूबे हुए हैं। इसी वंश के महाराजा सामंत सिंह 'नागरी दास' के नाम से विख्यात हुए हैं उन्होंने भक्ति काव्य की रसमई धारा को अत्यंत समृद्ध बनाते हुए अपना ही नहीं वरन् अपने वंश का नाम भी स्वर्णाक्षरों में अंकित करवाया । उन्होंने श्रीराधा रानी के चरणों में भक्ति व समर्पण भाव से सेवक, सखा, आत्मनिवेदनादि भावों का सुंदर निरूपण कर काव्य की रचना की। जिसमें वैष्णव पूजा, उत्सव झांकियों का मोहक वर्णन बड़ा सरस बन पड़ा है। राधा कृष्ण के प्रति दिव्य भावों की अभिव्यक्ति के कारण नागरीदास को अष्टछाप कवियों के समकक्ष रखकर नवम् नागरी दास कहा जाता है। नागरीदास की रचनाओं का संकलन 'नागर समुच्चय' में किया गया जिनमें रसिक लावनी, विहार चंद्रिका, निकुंज विलास, गोपी प्रेम प्रकाश, भक्ति मग दीपिका, रामचरित माला, जुगल भक्ति विनोद, फाग विहार तथा इश्क चमन इत्यादि ग्रंथ शृंगार, भक्ति व प्रेम के अनुपम उदाहरण हैं।

वैष्णव भक्ति के सागर में किशनगढ़ राजपरिवार की नारियों ने भी काव्य सर्जन द्वारा अपना अमूल्य योगदान दिया। महारानी बांकावती द्वारा ब्रज भाषा में भागवत का पद्यानुवाद 'ब्रजदासी भागवत' के नाम से किया गया। उनकी पुत्री सुंदर कुंवरी ने अपने ग्रंथों में राधा कृष्ण की जुगल भक्ति प्रकट करते हुए नेह निधि, वृंदावन गोपी महात्म्य, संकेत युगल, प्रेम संपुट आदि ग्रंथों की रचना की वहीं छत्र कुंवरी ने 'प्रेम विनोद' जैसे काव्य का सृजन किया। बनी ठनी द्वारा भी कृष्ण भक्ति की कई कविताएँ लिखी गईं जो नागर समुच्चय में समाविष्ट हैं।

महाराजा बिड़द सिंह द्वारा रचित गीत गोविंद पर लिखी टीका वैष्णव भक्ति का उच्च कोटि साहित्य है।

वैष्णव साहित्य को परिवर्धित करने में निंबार्क पीठ के आचार्यों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। राजस्थान में वैष्णव धर्म का सर्वप्रथम प्रचार करने वाले श्री परशुराम देवाचार्य द्वारा 'परशुराम सागर' में रामकृष्ण की समन्वयात्मक साधना की गई वहीं वृंदावन देवाचार्य के प्रसिद्ध ग्रंथ गीतामृत गंगा में कृष्ण चरित्र गाया गया।

किशनगढ़ शैली के चित्रों में भी अधिकांशत: कृष्ण लीला भी चित्रित की गई है जिसमें कृष्ण-राधा और उनकी राग बसंत, फाग आदि लीलाएँ पुष्टिमार्गीय परंपरा के अनुसार अभिव्यक्त की गई है। यहाँ की प्रमुख चित्र कृति बणी-ठणी को मोनालिसा से भी श्रेष्ठ मानते हुए कला प्रेमियों ने भूरी-भूरी प्रशंसा की है।

किशनगढ़ रियासत में पुष्टिमार्गीय आराधना पद्धति अपनाते हुए राधा-कृष्ण की लीलाओं से संबंधित पदों को हवेली संगीत के रूप में प्रश्रय मिला।

इस प्रकार इतिहास के गवाक्षों से अवलोकन करने पर किशनगढ़ रियासत का कण-कण वैष्णव भक्ति की आँखों से आलोकित दिखाई देता है।

पर्यावरण प्रदूषण को बचाने में महिलाओं की भूमिका

डॉ. सुधा मित्तल
वरिष्ठ व्याख्याता
व्यवसाय–प्रशासन

छूटी हरियाली, खोये पंछी छिन–छिन गया सुकून, यादें भोथ, बहते आंसू इक दरख्त का खून पढ़कर दिल में एक कचोट–सी उठती है और लगता है जैसे एक पेड़ की जीवन लीला समाप्त कर दी जाती है !

आज विचार करते हैं तो आश्चर्य होता है कि इतना लंबा समय हमने पर्यावरण शब्द के असीमित लाभ से वंचित रह कर कैसे व्यतीत किया ! पर्यावरण जिसका अर्थ परि+आवरण अर्थात् आस पास की वायु जलीय परिस्थितियां ! परंतु हमें यह पुरानी घिसे पीटे अर्थ से संतोष नहीं हुआ और उसे हमने जरा सा परिवर्तित कर दिया ऊपरी + आवरण अर्थात चोला या लबादा ! जिसे जब चाहा जेसे चाहा पहन लिया एवं उतार दिया और इसकी आड़ में हमारा किसी भी प्रकार का पैबंद भी चलता रहे।

यही स्थिति पर्यावरण और पर्यावरणविदों की है। पर्यावरण का विकास अपने स्वयं के विकास में सहायक है। संतुलित पर्यावरण यह दार्शाता है कि इसके अंतर्गत प्रकृति के मानवीय संसाधन जितने ही निर्मल होंगे समाज में शिक्षा, स्वास्थ्य, चिकित्सा अर्थ तंत्र तथा पर्यावरण का विकास होगा। शारीरिक सामाजिक ढांचा मजबूत होगा। परंतु पर्यावरण को प्रदूषण से बचाने के लिए महिलाओं का शिक्षित होना और सशक्त होना पुरुषों से कहीं अधिक अनिवार्य है। यदि नारी शिक्षित है तो परिवार और समाज का वातावरण शुद्ध होगा। महिला ही समाज और परिवार का पहले पोषण करती है और उसके बाद दोहन। क्योंकि पोषण एवं दोहन एक पारस्परिक पूरक संबंध है और इसमें संतुलन बना रहता है। महिलाएं परिवार में 'वसुधैव कुटुंबकम्' की अवधारणा को बखूबी निभा सकती हैं। जिसके माध्यम से सामाजिक प्रदूषण को नियंत्रित किया जा सकता हैं। महिलाएं स्वच्छता,पोषण,जनसंख्या नियंत्रण पर अधिक ध्यान देकर सामाजिक कार्यों में वृद्धि कर सकती हैं। स्वास्थ्य की दृष्टि से देखें तो महिलाएं परिवार, आसपास में संगठित होकर स्वच्छता को बनाए रखती हैं; जिससे किसी भी प्रकार की बीमारियों को रोकने में वे सहायक भूमिका निभा सकती हैं। अभी हाल ही कोरोना की महामारी परिस्थिति के अंतर्गत भी यह देखा गया है कि घरों में महिलाओं के द्वारा कई इस प्रकार के कार्य किए गए हैं जिससे 90 प्रतिशत परिवार के लोगों को कोरोना से बचाया गया है। इस समय मे पारिवारिक प्रदूषण को बदला, सबकी भावनाओं को समझने का अवसर मिला, क्योंकि अधिकतर एकल परिवार में बच्चों को बड़ों के साथ रहने का मौका कम ही मिल पाता था। इन सबके साथ, चाहे वह पेड़ पौधे लगाना है, साफ सफाई रखनी है, खान–पान का ध्यान रखना है या किसी भी प्रकार की स्थिति को संतुलित बनाए रखने में महिलाओं की अत्यंत सराहनीय भूमिका देखी गई। महिलाओं को आर्थिक–सामाजिक रुप से सशक्त किया जाये तो निश्चित ही वे किसी भी कार्य मे अपनी अहम भूमिका रखती हैं। यह निश्चित है कि यदि महिलाएं शिक्षित होती हैं तो वह सामाजिक,सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा बखूबी कर सकती हैं और हमारे समाज का जो परिवेश है और उसका पर्यावरण है वह भी दूषित हो रहा है, जिसमें आत्मदाह,दुर्घटनाएँ, आत्महत्या जैसे परिणामों को रोका जा सकता है। इस प्रकार से वर्तमान समय में हम सभी महिलाओं को पुरानी कहावत 'धर्मो रक्षति रक्षिताः' को पूरा करना होगा और यह संकल्प लेना होगा कि हम पर्यावरण को प्रदूषण से बचाएंगे तो पर्यावरण हमारी रक्षा करेगा।

धर्म

डॉ. उमा बारैठ
एसोसिएट प्रोफेसर
संस्कृत विभाग

1. अहिंसा सत्यमस्तेय मकामक्रोध लोभता।
भूतप्रिय हितेहा च धर्मोडयं सार्ववार्षिकः
श्रीमद् भागवत (11/17/21)
अहिंसा सत्य अस्तेय अकाम अक्रोध अलोभ तथा।
सभी प्राणियों के प्रति हित की भावना ये सभी वर्णों के धर्म है।

2. सत्य ब्रूयात् प्रिय ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम
प्रियं च नानृतं ब्रूयादेष धर्मः सनातनः (मनुस्मृति 8/15)
सत्य बोले प्रिय बोले ! अप्रिय सत्य न बोले। प्रिय होने पर भी असत्य
न बोले यही सनातन धर्म है।

3. सत्यमस्तेयमक्रोध ह्रीः शौचं धीर्धृतिर्दमः
संयतेन्द्रियता विद्या धर्मः सर्व उदाहृतः याज्ञवल्क्य स्मृति
सत्य अस्तेय अक्रोध ही (लज्जा) शौच धैर्य, दम (संयम) जितेन्द्रियत्व और विद्या ये धर्म के लक्षण है।

4. धृतिः क्षमा दमोस्तेय शौचमिन्द्रयनिग्रहः ।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दथकं धर्म लक्षणम ।।
याज्ञवल्लक्य स्मृति (3/4/66)
धैय, क्षमा, संयम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय निग्रह, बुद्धि विद्या सत्य और अक्रोध ये धर्म
के दस लक्षण है।

5. यस्य धर्मविहिनानि दिनान्यायान्ति यान्ति च।
स लोहाकारभस्त्रेव श्वसन्नति न जीवती पंचतन्त्र (3/63)
जिस पुरूष के दिन धर्मानुष्ठान के बिना ही व्यतीय होते है वह लुहार की
धोकनी के समान श्वास लेता हुआ भी जीवित नहीं है।

सुभाषित–प्रदीप

भावना यादव

स्नातकोत्तर संस्कृत

अनुष्टुप्–

शैले शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे
साधवो न हि सर्वत्र चन्दनम् न वने वने ।।

गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णु गुरूर्देवो महेश्वरः
गुरूसाक्षाद् परब्रह्मः तस्मै श्री गुरूवे नमः।।

तत्वज्ञः सर्वभूतानां योगज्ञः सर्व कर्मणाम्।
उपायज्ञो मनुष्याणां नरः पण्डित उच्यते।।

अनाहूतो प्रविशति अपृष्टो बहु भाषते।
अविश्वस्ते विश्वसिति मूढ़चेता नराधमः।।

मंदाकान्ता–

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्ण शुभांगम्
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानमृगम्यं
वन्दे विष्णु भव भयहरं सर्वलोकैकनाथम्।

शार्दूल–

या कुन्देन्दुतुषारहारधवलाया शुभवस्त्रावृत्ताः
या वीणा वरदण्डमण्डितकरा या श्वेत पद्मासना।
या ब्रह्मच्युतशंकर प्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेष जाड्यापहा ।।

शार्दूल–

विद्यानामनरकस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नं गुप्तधनम्
विद्या भोगकरी यशः सुखकरी, विद्यागुरूणां गुरूः।
विद्याबंधुजनोविदेश गमने, विद्या परं दैवतम्
विद्याराजसुपूज्यते नहिधनं, विद्या विहीनः पशुः।।

शिखरिणी–

यदा लोके सूक्ष्मं व्रजति सहसा तद् विपुलतां
यदर्धेविच्छिन्नं भवति कृतसंधानमिवतत्।
प्रकृत्या यद् वक्रं तदपि समरेखंनयनयो
र्नमेदुरे किंचित् क्षणमपि न पार्श्वेरथ जवात्।।

BAREFOOT COLLEGE – HISTORY

DR.RAJANI SHARMA

ASSISTANT PROFESSOR

HISTORY

"The founders of the SWRC could hardly be accused of stacking the cards in favor of easy success for their experiment. Indeed, if it could be made to work under the rugged conditions in the Silora Block of Ajmer District it could probably work anywhere" wrote a research team that analysed the SWRC during its early years.

Rajasthan, 'the Land of Drought and Colour', is a semi-arid state where access to water is a never-ending story. Many people survive on subsistence farming or manual labour. Over forty-five percent of all males and males and eighty percent of all females are illiterate. More than half of the children of school-going age (6-14) do not attend school. The majority of these are girls. Nevertheless, a long history of oral tradition has contributed to a rich and diversified culture.

The SWRC was officially started in the village of Tilonia in 1972. Forty-five acres of government land and an abandoned, 21 building, tuberculosis sanitarium were leased from the government for Rs. 1 per month (less than US five cents). Its founder, Bunker Roy, wanted to break away from the "social work tradition" which in India had an urban, middle class, academic orientation. He envisioned an organization that would be based in the village of Tilonia and attract young urban professionals to work with local residents in an integrated development process. They would immerse themselves in the realities of rural life and participate in a "dirty hands" approach to research that would lead to action. This joint venture with specialists and local residents was symbolized in the organisation emblem which depicts two people joining hands – one person is holding a book and the other a plant.

Working with a few professionals and local the residents, the SWRC launched itself with a ground water survey of the 110 villages in Silora Block for the Rural Electrification Corporation. The project took two years and resulted in the electrification of almost all the villages in the Block a decade later. Gradally health and education programmes were developed. These were followed by work in rural industries and agricultural extension.

"The urban-educated professionals had to go through a deschooling process because whatever they had learned in their university education was in direct conflict with what was happening in the field. There was a feeling of getting into a process of understanding the inherent value of human beings and working with them. "S. Srinivasn, Barefoot College staff,initially, the SWRC was interested in providing technical and socio-economic servirces to all the villages in Silora Block. However, experience taught them that when they attempted to work with a village as a whole, the more powerful members of the village would manipulate the programme in their favour.

"In India, there are castes, there are classes, but very rarely are there actual communities, the only exceptions being the tribal societies' areas". Bunker Roy

The staff began to realize that a village is not a homogenous community. They discovered that in Tilonia village alone there were fourteen different castes with very specific social traditions. The location of a well, for example, would become an issue because the 'higher' castes wanted it near them and would not drink from a well in a 'lower' caste area. Similarly, the irrigation schemes set up were benefiting affluent farmers who owned large tracts of land. The staff realized that even if they only wanted to work with the rural poor, that was not always a straightforward task. Identification of the rural poor was, in itself, problematical for 'outsiders'.

"When the SWRC started, we were confounded by the fact-who is the rural poor? Do you identify them as people who are living in a hut and wearing tattered clothes? We observed that someone might be living in a hut and wearing tattered clothes and be the vested interest himself!" S.Srinivasan, Barefoot College staff

By 1979, the SWRC staff decided to rethink their objectives and address the various dilemmas. They asked themselves "Do we work with all members of the community or just the poor? Is it better to work with the influential members of the village and change their attitudes or support the poor exclusively and run into conflicts with opinion leaders? "They made the deliberate decision to work with the poor. They identified marginal farmers, landless peasants, rural artisans, women, children, and scheduled castes and tribes as their target group.

"The reaction of those with vested interests in the villages has been one of caution. They speak disparagingly of the Barefoot College as an agency which only supports scheduled castes and harijans, but the Barefoot College takes this as a compliment." Bunker Roy

"If you live a simple lifestyle and work closely with a community then gradually you come to understand who is exploiting whom. You are able to clearly understand who are the vested interests and who are the rural poor". S.srinivasan

Also in those early years, another transition was happening amongst the staff. As the organization grew, more and more of the staff were drawn from villages in silora block their experience was influencing the policies and programmes of the SWRC which began to reduce the emphasis on urban professionals . Untils then,the organization had differentiated the expertise of the staff with the titles of 'Specialist professional' and 'Para-professional'. The specialists had carried more weight in decision-making and were paid higher salaries. The staff entered into a self-evaluation process that transformed their priorities and the organization. They began to question all of their assumptions with respect to their work. Finally they agreed that they could build on three assumptions as they redefined their understanding of education and development. Their assumptions were; (1) that there is poverty in rural areas; (2) that it wont go away on its own and; (3) that something must be done about it.

Through this self-evaluation process and their ongoing experience they have redefined concepts of development, education ,experts, professionalism, research,and a host of related others. They emerged with an organization which has become a creative leader in education and development. They took the radical step of leveling out the salary scale and treating all staff equally. (some of the urban-educated staff resigned at this point). They decentralised their programmes even more into surrounding villages through the establishment of field centres and they began a new phase of collaboration with the rural poor. Today approximately eighty percent of the staff have their roots in rural rajasthan. Identifying who are the rural poor is no longer a problem as many of the staff constitute the rural poor from their villages.

"Tilonia was keen on professionalizing volunteerism and using village skills already available in the village community". Bunker roy

At the barefoot college, education and development is for the rural poor and managed by the rural poor. Education is viewed as a means for developing self-esteem, learning skils that can contribute to the students community, developing awareness about the environment and development. Literacy and numeracy are part of this process but are not the central goal. ' Expertise ' is development at the Barefoot College through hands on experience in training programmes and through the informal learning of rural life. Data is gathered to design and evaluate programmes through a participatory research process. Night school teachers, midwives and day care workers are trained in recording information on health and education topics.

The college has delinked education from degrees and seeks to facilitate an education process particularly for those who have been failed by the formal system.

Critics of the formal education system state that it is oriented to meet the needs of the urban middle-class. The reasons given are that the school timings. (during the day, vacation schedules)' didn't coincide with the times that rural children are able to attend the curriculum has an urban bais and prepares students for government and professional employment sectors that have gross unemployment the language of instruction generally forces children to learn in their second language. In addition, school are often not located within reasonable walking distance for young children and formally-educated teachers are frequently absent from rural schools. All of this conspires to undermine the learning experience of rural children and disassociate them from the traditional learning patterns of their environment.

The result says professor C.J.Daswani of the National Council of Educational Research and Training (NCERT) is that children become 'pull-outs' or stay-outs. If we add to this the low priority that many families give to Educating girls,we see that there are enormous hurdles for those who are aiming for education for all. The Barefoot College has recognized these issues and its barefoot training programme deals with Them effectively. Since its inception, the Barefoot College has trained and put in the field:

Nearly 600 barefoot machanics, repairing and maintaining over 20,000 india mark II hand pumps20 barefoot solar engineers who have solar electrified the college campus,300 adult education centres in 6 states of india,22 villages in ladakh (11,500 ft. in the Himalayas), 30 night schools for children. Barefoot construction engineers havw fabricated and installed over 50 geodesicomes in 5 states of india. Barefoot communicators, using traditional media have traveled throughout ora block conveying relevant social messages. Barefoot doctors and health care works are being used extensively for preventive health care.